



आर. एम. सिंह की राजनीतिक पोर्ट्रेट पेंटिंग: यथार्थवाद, व्यक्तित्व, सत्ता-प्रतीक और संस्थागत स्मृति का अध्ययन

विनोद कुमार

शोधार्थी, ललित कला विभाग, देश भगत विश्वविद्यालय, पंजाब

डॉ. यति दत्त

शोध-निर्देशक, ललित कला विभाग, देश भगत विश्वविद्यालय, पंजाब

Article Info: (Received- 27/05/2026, Accept- 20/06/2026, Published- 10/07/2026)

DOI- 10.70650/rvimj.2026v3i70012

सारांश

प्रस्तुत शोध-पत्र समकालीन भारतीय यथार्थवादी चित्रकार आर. एम. सिंह (राही महिंदर सिंह) की राजनीतिक एवं आधिकारिक पोर्ट्रेट पेंटिंग का विस्तृत कला-ऐतिहासिक, तकनीकी, सौंदर्यात्मक तथा वैचारिक अध्ययन प्रस्तुत करता है। शोध का प्रमुख आधार कलाकार से प्राप्त साक्षात्कार, उपलब्ध कलाकृतियों से संबंधित दस्तावेजी विवरण तथा उनके कलात्मक जीवन और प्रक्रिया से संबंधित प्राथमिक सामग्री है। अध्ययन में विशेष रूप से ज्ञानी गुरुनाथ मुसाफिर, श्री शिवराज पाटिल, श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल, श्री प्रणब मुखर्जी, श्री रामनाथ कोविंद तथा श्रीमती सुमित्रा महाजन के पोर्ट्रेटों को केस स्टडी के रूप में लिया गया है। स्रोत-सामग्री के अनुसार आर. एम. सिंह की राजनीतिक पोर्ट्रेट कला का मूल आधार यथार्थवाद है, किंतु उनका यथार्थवाद केवल बाह्य समानता की पुनरावृत्ति नहीं करता; उसमें व्यक्तित्व, गरिमा, आयु, भाव, प्रकाश, रंग, वेशभूषा, वास्तुशिल्पीय संदर्भ, राष्ट्रीय प्रतीक और सामाजिक-पद की दृश्य अभिव्यक्ति सम्मिलित होती है। शोध से यह स्पष्ट होता है कि राजनीतिक पोर्ट्रेट आर. एम. सिंह के लिए केवल किसी राजनेता के चेहरे का चित्रण नहीं है, बल्कि व्यक्ति और पद, निजी पहचान और सार्वजनिक छवि, यथार्थ और आदर्शिकरण तथा कला और संस्थागत स्मृति के बीच एक दृश्य सेतु है। राष्ट्रपति भवन और संसद भवन जैसे संस्थागत स्थलों में स्थायी रूप से प्रदर्शित उनके पोर्ट्रेट व्यक्ति को उसके ऐतिहासिक और संवैधानिक संदर्भ में स्थापित करते हैं। यह दृष्टिकोण अंतरराष्ट्रीय पोर्ट्रेट परंपरा से भी जुड़ता है, जहाँ आधिकारिक पोर्ट्रेट केवल सपामदमे नहीं बल्कि चरित्र, सामाजिक स्थिति, सांस्कृतिक महत्व और राजनीतिक शक्ति को व्यक्त करने का माध्यम रहा है। अध्ययन यह भी स्थापित करता है कि कलाकार की प्रारंभिक ग्रामीण एवं पंजाबी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, सरदार सोभा सिंह से प्राप्त प्रेरणा, यूरोपीय अकादमिक एवं यथार्थवादी कलाकारों कूपीटर पॉल रूबेंस, जैक-लुई डेविड, लॉर्ड फ्रेडरिक लीटन और जॉन सिंगर सार्जेंटकृका अध्ययन तथा प्रकृति के प्रत्यक्ष अवलोकन ने उनकी राजनीतिक पोर्ट्रेट भाषा को आकार दिया। राजनीतिक पोर्ट्रेटों के विश्लेषण से सामने आता है कि कलाकार फोटोग्राफ को प्रारंभिक संदर्भ के रूप में स्वीकार करते हुए भी अंतिम चित्र में चयन, पुनर्संयोजन, प्रकाश-व्यवस्था, पृष्ठभूमि और व्यक्तित्व की व्याख्या के लिए पर्याप्त रचनात्मक स्वतंत्रता रखते हैं। अतः आर. एम. सिंह की राजनीतिक पोर्ट्रेट कला को समकालीन भारतीय आधिकारिक पोर्ट्रेट परंपरा में यथार्थवाद और कलात्मक व्याख्या के संतुलित रूप के रूप में देखा जा सकता है।

प्रमुख शब्द— राजनीतिक पोर्ट्रेट, आधिकारिक पोर्ट्रेट, आर. एम. सिंह, राही महिंदर सिंह, यथार्थवाद, ऑयल ऑन कैनवस, राष्ट्रपति भवन, संसद भवन, लोकसभा अध्यक्ष, राजनीतिक कला, व्यक्तित्व-अभिव्यक्ति, राष्ट्रीय प्रतीक, संस्थागत स्मृति, प्रकाश-छाया, भारतीय समकालीन चित्रकला।

परिचय—

पोर्ट्रेट पेंटिंग कला की उन विधाओं में से है जिसमें व्यक्ति की दृश्य समानता के साथ-साथ उसकी पहचान, सामाजिक स्थिति, व्यक्तित्व और ऐतिहासिक उपस्थिति को संरक्षित करने का प्रयास किया जाता है। पोर्ट्रेट का उद्देश्य केवल किसी व्यक्ति के चेहरे को पहचानने योग्य बनाना नहीं है; उसकी संरचना, मुद्रा, वेशभूषा, पृष्ठभूमि, प्रकाश, प्रतीक और वस्तुएँ उस व्यक्ति के बारे में अतिरिक्त अर्थ निर्मित करती हैं। राष्ट्रीय पोर्ट्रेट गैलरी के अनुसार पोर्ट्रेट इस बात को व्यक्त करता है कि व्यक्ति स्वयं को किस रूप में देखता है और समाज में किस प्रकार दिखाई देना चाहता है; इसमें पहचान, प्रतीक, स्थिति और कलाकार की चयनात्मक दृष्टि महत्वपूर्ण होती है।

राजनीतिक पोर्ट्रेट इसी व्यापक पोर्ट्रेट परंपरा का विशिष्ट रूप है। इसमें चित्रित व्यक्ति सामान्य निजी व्यक्ति न होकर किसी राजनीतिक, संवैधानिक, प्रशासनिक अथवा सार्वजनिक भूमिका से जुड़ा होता है। इसलिए उसके चित्र में निजी व्यक्तित्व के साथ पद की गरिमा, सत्ता की वैधता, राष्ट्रीय पहचान और सार्वजनिक स्मृति भी सम्मिलित होती है। ऐतिहासिक रूप से शासकों और राजनीतिक व्यक्तित्वों के पोर्ट्रेट सत्ता, वंश, वैधता और सामाजिक प्रतिष्ठा के दृश्य उपकरण रहे हैं। मेट्रोपॉलिटन म्यूजियम ऑफ आर्ट के अध्ययन में भी राजनीतिक नेतृत्व के पोर्ट्रेटों को शक्ति, वैधता और स्मृति से जोड़कर देखा गया है।

भारतीय कला-परंपरा में भी राजाओं, शासकों, धार्मिक नेताओं, सामाजिक प्रतिष्ठित व्यक्तियों तथा बाद में औपनिवेशिक अधिकारियों और आधुनिक राजनीतिक व्यक्तित्वों के चित्र बनाए गए। भारतीय पोर्ट्रेट परंपरा में मुगल यथार्थवाद, राजस्थानी एवं पहाड़ी दरबारी चित्रण, औपनिवेशिक काल की यूरोपीय तकनीक तथा फोटोग्राफी के प्रभाव ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ब्रिटिश काल में भारतीय कलाकारों ने पश्चिमी प्रकाश, परिप्रेक्ष्य और छायांकन तकनीकों को स्थानीय चित्रात्मक परंपराओं के साथ जोड़ा।

इसी ऐतिहासिक और वैचारिक पृष्ठभूमि में आर. एम. सिंह की कला का अध्ययन महत्वपूर्ण हो जाता है। वे मूलतः यथार्थवादी चित्रकार हैं और उनकी कला-यात्रा बचपन के स्केचिंग अभ्यास से शुरू होकर संसद भवन तथा राष्ट्रपति भवन जैसे राष्ट्रीय संस्थानों तक पहुँची। स्रोत-सामग्री के अनुसार उन्होंने विभिन्न राष्ट्रपतियों, लोकसभा अध्यक्षों और अन्य राष्ट्रीय व्यक्तित्वों के आधिकारिक पोर्ट्रेट बनाए।



चित्र: शोध विषय के संदर्भ में चित्रकार आर. एम. सिंह जी का साक्षात्कार लेते हुए शोधार्थी विनोद कुमार एवं उनके शोध-निर्देशक डॉ. यति दत्त।

अध्ययन की पृष्ठभूमि एवं संदर्भ

आर. एम. सिंह का मूल नाम राही महिंदर सिंह है और कला-जगत में वे आर. एम. सिंह के नाम से प्रसिद्ध हैं। उनका प्रारंभिक जीवन पंजाब के ग्रामीण परिवेश में बीता। उनके पिता सरदार मेहर सिंह पेशेवर फोटोग्राफर थे और उनके दादा सरदार प्रीतम सिंह बड़ई तथा नक्काशीकार होने के साथ फोटोग्राफी से भी जुड़े थे। इस प्रकार कलाकार के परिवार में दृश्य कला, फोटोग्राफी, लकड़ी का कार्य और हस्तकौशल का वातावरण पहले से मौजूद था।

उनकी कला-यात्रा औपचारिक कला शिक्षा से पहले ही प्रारंभ हो गई थी। बचपन में उन्होंने स्केचिंग, पेंसिल कलर, पोस्टर कलर, वाटर कलर और बाद में ऑयल पेंट का प्रयोग किया। रेलवेस्टेशन पर यात्रियों के त्वरित स्केच बनाने की प्रक्रिया ने उन्हें मानव चेहरे, अनुपात, रेखा और प्रत्यक्ष अवलोकन का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया।

औपचारिक कला-शिक्षा के लिए उन्होंने वर्ष 1984 में चंडीगढ़ स्थित कला महाविद्यालय में प्रवेश लिया। इसी संस्थागत परिवेश में उनकी तकनीकी दक्षता को व्यवस्थित दिशा मिली। अध्ययन के दौरान उन्हें जेम पदकपदमचतमे तथा बाद में जेम जत्तपइनदम के साथ स्वतंत्र कलाकार और इलस्ट्रेटर के रूप में कार्य करने का अवसर मिला। इस व्यावसायिक अनुभव ने उनके कार्य को व्यापक सार्वजनिक क्षेत्र में पहुँचाया।

उनकी राजनीतिक पोर्ट्रेट कला का विकास इसी लंबी यात्रा के परिणामस्वरूप हुआ। एक ओर स्थानीय एवं

सांस्कृतिक अनुभवों से विकसित यथार्थवाद था और दूसरी ओर राष्ट्रीय संस्थानों तथा उच्च-प्रोफाइल व्यक्तित्वों के साथ कार्य करने का अवसर। गुरबख्श सिंह मुसाफिर के पोर्ट्रेट का संसद भवन से जुड़ना उनके राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित होने की दिशा में महत्वपूर्ण पड़ाव था। इसके बाद राष्ट्रपति भवन से संबंधित आधिकारिक पोर्ट्रेटों ने उनकी पहचान को और मजबूत किया।

साहित्य समीक्षा—

पोर्ट्रेट कला पर उपलब्ध कला-ऐतिहासिक साहित्य यह स्पष्ट करता है कि पोर्ट्रेट को केवल सपामदमे की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता। मेट्रोपॉलिटन म्यूजियम ऑफ आर्ट के अनुसार पुनर्जागरणकालीन पोर्ट्रेट व्यक्ति, समाज, राजनीति, सौंदर्य और व्यक्तित्व की अवधारणाओं से गहराई से जुड़े थे। राजनीतिक पोर्ट्रेट में सत्ता और प्रतिनिधित्व का संबंध विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। मेडिची काल के पोर्ट्रेटों के अध्ययन से पता चलता है कि राजपरिवार के चित्र शक्ति, वंश की निरंतरता, सांस्कृतिक परिष्कार और राजनीतिक महत्व को स्थापित करने के लिए प्रयुक्त होते थे।

इसी प्रकार अफ्रीकी नेतृत्व के पोर्ट्रेटों के अध्ययन में पोर्ट्रेट-निर्माण को शक्ति, वंशगत वैधता, प्रतिष्ठा और सामुदायिक स्मृति से जोड़ा गया है। इससे यह सैद्धांतिक आधार प्राप्त होता है कि राजनीतिक व्यक्तित्व का चित्र अपने विषय से आगे जाकर सत्ता-संबंधों और सामाजिक स्मृति का दृश्य दस्तावेज बन सकता है। राष्ट्रीय पोर्ट्रेट गैलरी के अध्ययन में पोर्ट्रेट और प्रचार के संबंध पर भी बल दिया गया है। ऐतिहासिक संदर्भों में पोर्ट्रेट राजनीतिक विचारों, साम्राज्यवादी शक्ति और सामाजिक पद को प्रभावशाली दृश्य रूप में प्रस्तुत करने का माध्यम बने। भारतीय पोर्ट्रेट परंपरा के संदर्भ में मुगल और राजपूत परंपराओं से लेकर ब्रिटिश काल तक यथार्थवादी चित्रण, प्रकाश-छाया, परिप्रेक्ष्य तथा यूरोपीय तकनीकों के प्रभाव का विकास देखा जा सकता है।

इन अंतरराष्ट्रीय और भारतीय संदर्भों के बीच आर. एम. सिंह की राजनीतिक पोर्ट्रेट कला का अध्ययन एक विशिष्ट समकालीन उदाहरण प्रस्तुत करता है, क्योंकि उनकी कला में अकादमिक यथार्थवाद, भारतीय सांस्कृतिक पहचान, संस्थागत संदर्भ और आधुनिक आधिकारिक पोर्ट्रेट की आवश्यकताएँ एक साथ दिखाई देती हैं।

शोध समस्या

राजनीतिक व्यक्तित्वों के पोर्ट्रेट सामान्य पोर्ट्रेट से अलग होते हैं, क्योंकि उनमें चित्रित व्यक्ति की निजी पहचान के साथ उसके संवैधानिक पद और सार्वजनिक छवि को भी व्यक्त करना होता है। ऐसी स्थिति में कलाकार के सामने यह चुनौती रहती है कि चित्र कितना फोटोग्राफिक हो और कितना कलात्मक।

दूसरी समस्या यह है कि आधिकारिक पोर्ट्रेट लंबे समय तक सार्वजनिक संस्थानों में प्रदर्शित होते हैं। इसलिए उनमें तत्कालीन व्यक्ति के साथ-साथ भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी गरिमा, ऐतिहासिकता और संस्थागत पहचान सुरक्षित रखनी होती है।

तीसरी समस्या राजनीतिक व्यक्तित्व की वास्तविकता और आदर्शकृत प्रस्तुति के बीच संतुलन की है। आर. एम. सिंह के कथनों और कार्यों में यह स्पष्ट है कि वे फोटोग्राफिक नकल को पर्याप्त नहीं मानते। वे चेहरे की समानता के साथ व्यक्तित्व, गरिमा, प्रकाश, वातावरण और सामाजिक पद की अभिव्यक्ति को आवश्यक मानते हैं।

इसलिए शोध की मूल समस्या यह निर्धारित करना है कि आर. एम. सिंह अपने राजनीतिक पोर्ट्रेटों में यथार्थ, व्यक्तित्व, सत्ता-प्रतीक, संस्थागत वातावरण और कलात्मक स्वतंत्रता का संयोजन किस प्रकार करते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य—

इस अध्ययन का व्यापक उद्देश्य आर. एम. सिंह की राजनीतिक एवं आधिकारिक पोर्ट्रेट पेंटिंग का कला-ऐतिहासिक, सौंदर्यात्मक, तकनीकी और वैचारिक अध्ययन करना तथा यह समझना है कि उनकी यथार्थवादी चित्रण-पद्धति राजनीतिक व्यक्तित्वों की सार्वजनिक और संस्थागत छवि के निर्माण में किस प्रकार योगदान देती है।

अध्ययन के उद्देश्य—

- आर. एम. सिंह की राजनीतिक पोर्ट्रेट कला के विकास का अध्ययन करना।
- उनके राजनीतिक एवं आधिकारिक पोर्ट्रेटों की विषय-वस्तु, संरचना, रंग, प्रकाश और पृष्ठभूमि का विश्लेषण करना।
- ऑयल ऑन कैनवस माध्यम तथा कलाकार की चित्रण तकनीकों का अध्ययन करना।
- राजनीतिक व्यक्तित्व के बाह्य रूप और आंतरिक व्यक्तित्व के बीच कलाकार द्वारा स्थापित संबंध का विश्लेषण करना।

- राष्ट्रपति भवन तथा संसद भवन जैसे संस्थागत स्थलों की भूमिका का अध्ययन करना।
- राजनीतिक पोर्ट्रेट में राष्ट्रीय प्रतीकों, स्थापत्य और वेशभूषा के प्रयोग का अध्ययन करना।
- फोटोग्राफिक संदर्भ और कलाकार की रचनात्मक स्वतंत्रता के संबंध का अध्ययन करना।
- चयनित राजनीतिक पोर्ट्रेटों का तुलनात्मक विश्लेषण करना।
- राजनीतिक पोर्ट्रेट को ऐतिहासिक एवं संस्थागत स्मृति के माध्यम के रूप में समझना।
- समकालीन भारतीय आधिकारिक पोर्ट्रेट कला में आर. एम. सिंह के योगदान का मूल्यांकन करना।

शोध प्रश्न—

पहला प्रश्न यह है कि आर. एम. सिंह की राजनीतिक पोर्ट्रेट कला में यथार्थवाद किस प्रकार व्यक्त होता है?

दूसरा प्रश्न यह है कि कलाकार किसी राजनीतिक व्यक्तित्व की व्यक्तिगत पहचान और संवैधानिक/सार्वजनिक पद की गरिमा के बीच संतुलन कैसे स्थापित करते हैं?

तीसरा प्रश्न यह है कि प्रकाश, रंग, पृष्ठभूमि, वास्तुकला और वेशभूषा राजनीतिक पोर्ट्रेट के अर्थ को किस प्रकार प्रभावित करते हैं?

चौथा प्रश्न यह है कि फोटोग्राफिक संदर्भों का उपयोग करने के बावजूद कलाकार किस प्रकार रचनात्मक स्वतंत्रता बनाए रखते हैं?

पाँचवाँ प्रश्न यह है कि संसद भवन और राष्ट्रपति भवन में स्थायी प्रदर्शन राजनीतिक पोर्ट्रेट को किस प्रकार संस्थागत स्मृति में परिवर्तित करता है?

छठा प्रश्न यह है कि विभिन्न राजनीतिक व्यक्तित्वों के पोर्ट्रेटों में कलाकार की तकनीकी एवं वैचारिक दृष्टि में कौन-सी समानताएँ और अंतर दिखाई देते हैं?

शोध पद्धति—

शोध अभिकल्प—

यह अध्ययन मुख्यतः गुणात्मक, वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक तथा तुलनात्मक शोध अभिकल्प पर आधारित है। शोध में कलाकार के साक्षात्कार, कलाकृतियों से संबंधित दस्तावेजी सामग्री, दृश्य विवरण और उपलब्ध कला-ऐतिहासिक साहित्य का उपयोग किया गया है।

गुणात्मक एवं/या मात्रात्मक शोध दृष्टिकोण

शोध का प्रमुख दृष्टिकोण गुणात्मक है, क्योंकि राजनीतिक पोर्ट्रेटों में व्यक्तित्व, गरिमा, प्रतीक, प्रकाश, वातावरण, भाव और संस्थागत अर्थ जैसे तत्वों की व्याख्या आवश्यक है। जहाँ आवश्यक है, वहाँ कलाकृतियों के आकार, निर्माण-वर्ष, माध्यम और प्रदर्शन-स्थल जैसी मात्रात्मक सूचनाओं का उपयोग तुलनात्मक आधार के रूप में किया गया है।

प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोत

प्राथमिक स्रोत के रूप में आर. एम. सिंह से प्राप्त साक्षात्कार एवं कलाकार द्वारा बताए गए अनुभव प्रमुख हैं। द्वितीयक स्रोतों में पोर्ट्रेट कला का इतिहास, संग्रहालयीय अध्ययन, राजनीतिक कला से संबंधित कला-ऐतिहासिक सामग्री और उपलब्ध दस्तावेज सम्मिलित हैं।

क्षेत्रीय अध्ययन

क्षेत्रीय अध्ययन की दृष्टि से कलाकार के कार्यस्थल, कलाकृतियों, संस्थागत संग्रह और उपलब्ध दृश्य अभिलेख महत्वपूर्ण माने गए हैं। संसद भवन तथा राष्ट्रपति भवन में स्थायी रूप से प्रदर्शित पोर्ट्रेटों का संदर्भ उनके संस्थागत महत्व के अध्ययन में विशेष रूप से उपयोगी है।

कलाकारों के साक्षात्कार

इस शोध का सबसे महत्वपूर्ण प्राथमिक स्रोत आर. एम. सिंह का विस्तृत साक्षात्कार है। इसमें कलाकार ने अपनी कला-यात्रा, प्रेरणा, तकनीक, पोर्ट्रेट प्रक्रिया, राजनीतिक व्यक्तित्वों के साथ बैठकों, प्रकाश-व्यवस्था, संदर्भ-फोटोग्राफ और आधिकारिक पोर्ट्रेट के उद्देश्य पर विस्तृत जानकारी दी है।

केस स्टडी

चयनित केस स्टडी हैं— ज्ञानी गुरुनाथ मुसाफिर, श्री शिवराज पाटिल, श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल, श्री प्रणब मुखर्जी, श्री रामनाथ कोविंद तथा श्रीमती सुमित्रा महाजन।

प्रत्यक्ष अवलोकन

जहाँ कलाकृतियों की दृश्य सामग्री उपलब्ध है, वहाँ चेहरे की संरचना, मुद्रा, प्रकाश, रंग, पृष्ठभूमि, वेशभूषा, सहायक वस्तुओं और संरचनात्मक संतुलन का प्रत्यक्ष दृश्य विश्लेषण किया गया है।

दृश्य विश्लेषण

दृश्य विश्लेषण में निम्न तत्वों को आधार बनाया गया है—कृरेखा, आकृति, अनुपात, प्रकाश, छाया, रंग, बनावट, पृष्ठभूमि, परिप्रेक्ष्य, मुद्रा, दृष्टि, वेशभूषा, प्रतीक और संस्थागत संदर्भ।

तुलनात्मक विश्लेषण

राजनीतिक पोर्ट्रेटों की तुलना माध्यम, आकार, स्थान, व्यक्तित्व, प्रकाश, पृष्ठभूमि, तकनीक और प्रतीकात्मकता के आधार पर की गई है।

दस्तावेजी एवं अभिलेखीय शोध

कलाकृतियों के निर्माण—वर्ष, आकार, माध्यम, कमीशन, प्रदर्शन—स्थल और संस्थागत संदर्भ को उपलब्ध दस्तावेजों के आधार पर व्यवस्थित किया गया है।

डेटा संग्रह की प्रक्रिया

डेटा को मुख्यतः कलाकार के साक्षात्कार, कलाकृतियों के दस्तावेजी विवरण, दृश्य सामग्री और कला—ऐतिहासिक स्रोतों से एकत्रित किया गया। प्रत्येक राजनीतिक पोर्ट्रेट को स्वतंत्र केस के रूप में पढ़ते हुए बाद में तुलनात्मक निष्कर्ष निकाले गए।

डेटा का विश्लेषण एवं व्याख्या

डेटा का विश्लेषण तीन स्तरों पर किया गया। पहले स्तर पर तथ्यात्मक विवरणकृनाम, वर्ष, माध्यम, आकार और स्थानकृका अध्ययन किया गया। दूसरे स्तर पर दृश्य एवं तकनीकी तत्वों का विश्लेषण किया गया। तीसरे स्तर पर इन तत्वों को राजनीतिक प्रतिनिधित्व, व्यक्तित्व, सत्ता, स्मृति और संस्थागत पहचान के सैद्धांतिक संदर्भ में व्याख्यायित किया गया।

अध्ययन का क्षेत्र एवं सीमाएँ

इस अध्ययन का मुख्य क्षेत्र आर. एम. सिंह की राजनीतिक तथा आधिकारिक पोर्ट्रेट पेंटिंग है। इसमें कलाकार के सामान्य लैंडस्केप, धार्मिक चित्र, युद्ध—चित्र और अन्य गैर—राजनीतिक कार्यों को केवल उनके कलात्मक विकास की पृष्ठभूमि समझाने के लिए सीमित रूप में शामिल किया गया है। शोध की एक सीमा यह है कि उपलब्ध सामग्री मुख्यतः कलाकार के साक्षात्कार और उनके द्वारा उपलब्ध कराई गई जानकारी पर आधारित है। अतः जहाँ किसी तथ्य की स्वतंत्र अभिलेखीय पुष्टि उपलब्ध नहीं है, वहाँ उसे कलाकार के कथन या उपलब्ध स्रोत के रूप में ही ग्रहण किया गया है।

इसी प्रकार राजनीतिक पोर्ट्रेटों की दृश्य व्याख्या उपलब्ध छवियों और दस्तावेजी विवरण पर निर्भर है। इसलिए रंग, ब्रशवर्क या सतह की सूक्ष्मता के संबंध में प्रत्यक्ष मूल कलाकृति के अध्ययन की तुलना में उपलब्ध दृश्य सामग्री की सीमाएँ स्वीकार की जानी चाहिए।

ऐतिहासिक एवं सैद्धांतिक ढाँचा

पोर्ट्रेट और पहचान

पोर्ट्रेट कला व्यक्ति की पहचान को दृश्य रूप में स्थायी बनाती है। यह चेहरे की समानता के साथ उस व्यक्ति के सामाजिक अर्थ को भी निर्मित करती है। आधुनिक पोर्ट्रेट अध्ययन में पहचान, 'जंजने', 'लउइससपेउ और तमचतमेमदजंजपवद प्रमुख विश्लेषणात्मक अवधारणाएँ हैं।

पोर्ट्रेट और सत्ता

राजनीतिक पोर्ट्रेट सत्ता के दृश्य प्रतिनिधित्व का माध्यम है। ऐतिहासिक राजनीतिक चित्रों में राजाओं और शासकों को ऐसे प्रतीकों, वस्त्रों, वास्तुशिल्प और मुद्राओं के साथ दिखाया जाता था जो उनकी शक्ति और वैधता को स्थापित करते थे।

पोर्ट्रेट और संस्थागत स्मृति

किसी राजनेता का पोर्ट्रेट यदि संसद अथवा राष्ट्रपति भवन में स्थायी रूप से प्रदर्शित होता है, तो वह निजी कलाकृति से आगे बढ़कर संस्थागत स्मृति का दस्तावेज बन जाता है। इस प्रकार चित्रित व्यक्ति की पहचान उसके पद, संस्था और राष्ट्रीय इतिहास के साथ स्थायी रूप से जुड़ जाती है।

भारतीय संदर्भ

भारतीय पोर्ट्रेट कला में मुगल यथार्थवाद और औपनिवेशिक काल के यूरोपीय प्रभावों ने आधुनिक यथार्थवादी चित्रण की पृष्ठभूमि तैयार की। ब्रिटिश काल में प्रकाश, छाया, परिप्रेक्ष्य और मॉडल से प्रत्यक्ष अध्ययन जैसी तकनीकों का विस्तार हुआ।

आर. एम. सिंह का सैद्धांतिक आधार

आर. एम. सिंह की कला-दृष्टि में प्रकृति, प्रत्यक्ष अवलोकन, यथार्थवाद, गुरु-परंपरा और निरंतर अभ्यास केंद्रीय हैं। सरदार सोभा सिंह उनके लिए प्रारंभिक प्रेरणा एवं गुरु रहे, जबकि यूरोपीय कलाकारों के अध्ययन ने उनके अकादमिक यथार्थवाद को विस्तृत किया।

मुख्य शोध

आर. एम. सिंह की कला-यात्रा और राजनीतिक पोर्ट्रेट की ओर विकास

आर. एम. सिंह की राजनीतिक पोर्ट्रेट कला को समझने के लिए उनकी प्रारंभिक कला-यात्रा को समझना आवश्यक है। बचपन में रेलवेस्टेशन पर त्वरित स्केच बनाने का अनुभव उन्हें प्रत्यक्ष अवलोकन, चेहरे की संरचना और त्वरित रेखांकन का अभ्यास देता रहा। बाद में औपचारिक कला शिक्षा और व्यावसायिक इलस्ट्रेशन ने उनकी तकनीकी दक्षता को व्यवस्थित किया। Indian Express और The Tribune के लिए कार्य करने से उन्हें सार्वजनिक व्यक्तित्वों, समाचार-संबंधित विषयों और दृश्य संप्रेषण का व्यापक अनुभव प्राप्त हुआ। उनका यथार्थवाद किसी अचानक चुनी गई शैली का परिणाम नहीं था। कलाकार के अनुसार ग्रामीण जीवन, प्रकृति, घर में प्रदर्शित सरदार सोभा सिंह के चित्र और प्रत्यक्ष दृश्य अनुभवों ने उनके भीतर यथार्थवादी दृष्टि विकसित की। राजनीतिक पोर्ट्रेट की ओर उनका विकास उनके पहले राष्ट्रीय स्तर के कार्यों के साथ अधिक स्पष्ट हुआ। संसद भवन के लिए ज्ञानी गुरुनाथ मुसाफिर का चित्र और बाद में लोकसभा अध्यक्षों तथा राष्ट्रपतियों के आधिकारिक चित्रों ने उनके पोर्ट्रेट अभ्यास को राष्ट्रीय संस्थागत संदर्भ प्रदान किया।



1. ज्ञानी गुरुनाथ मुसाफिर का पोर्ट्रेट वर्ष 2007 ऑयल ऑन कैनवस आकार 34×26 इंच

ज्ञानी गुरुनाथ मुसाफिर का पोर्ट्रेट वर्ष 2007 में ऑयल ऑन कैनवस में 34x26 इंच आकार में बनाया गया। यह संसद भवन, नई दिल्ली में स्थायी प्रदर्शन का हिस्सा है। इस चित्र की विशेषता यह है कि इसका निर्माण सीधे संसद भवन के कमीशन से नहीं हुआ था। उस समय प्रमुख राजनीतिक नेताओं के पोर्ट्रेट संसद भवन में प्रदर्शित किए जाने थे और परिवारों से अनुरोध किया गया था कि वे योग्य कलाकार से चित्र बनवाकर उपलब्ध करवाएँ। इस प्रक्रिया में कलाकार को गुरुनाथ मुसाफिर का चित्र बनाने का अवसर मिला। यह पोर्ट्रेट आर. एम. सिंह की राष्ट्रीय राजनीतिक पोर्ट्रेट यात्रा का महत्वपूर्ण प्रारंभिक उदाहरण माना जा सकता है। इसमें समानता के साथ व्यक्तित्व, गरिमा, भाव और जीवंत उपस्थिति पर बल दिया गया है।



2. श्री शिवराज पाटिल का पोर्ट्रेट वर्ष 2012 माध्यम ऑयल ऑन कैनवस आकार 30×24 इंच

श्री शिवराज पाटिल का पोर्ट्रेट वर्ष 2012 में ऑयल ऑन कैनवस माध्यम में 30x24 इंच आकार में बनाया गया यह संसद भवन में स्थायी रूप से प्रदर्शित है और लोकसभा अध्यक्षों की गैलरी के लिए कमीशन किया गया था। इस पोर्ट्रेट में राजनीतिक पद की गरिमा और व्यक्तिगत उपस्थिति को एक साथ प्रस्तुत करने का प्रयास दिखाई देता है। कलाकार ने केवल बाहरी समानता के बजाय व्यक्तित्व और प्रभावशाली उपस्थिति को प्राथमिकता दी। यह कृति संसद की संस्थागत स्मृति में एक राजनीतिक व्यक्ति की दृश्य उपस्थिति को स्थायी बनाती है। इस प्रकार यह निजी पोर्ट्रेट से संस्थागत इतिहास के दस्तावेज में परिवर्तित हो जाती है।



3. श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल का पोर्ट्रेट वर्ष 2012 आकार लगभग 8x5 फीट माध्यम ऑयल ऑन कैनवस

श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल का पोर्ट्रेट यह राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली के स्थायी संग्रह में है। इस कार्य के लिए कलाकार को चयन प्रक्रिया से गुजरना पड़ा। राष्ट्रपति भवन की ओर से कई कलाकारों को शॉर्टलिस्ट किया गया था। कलाकार के लिए यह चुनौती केवल एक राष्ट्रपति का चित्र बनाना नहीं थी, बल्कि राष्ट्रपति भवन में पहले से प्रदर्शित आधिकारिक पोर्ट्रेटों की परंपरा के अनुरूप एक प्रभावशाली और विशिष्ट दृश्य भाषा विकसित करना भी था। इस पोर्ट्रेट में कलाकार ने फोटोग्राफिक समानता के साथ संवैधानिक पद, सामाजिक प्रतिष्ठा और व्यक्तिगत व्यक्तित्व को दृश्य रूप दिया। ऑयल की परतें, नियंत्रित रंग-संयोजन, प्रकाश-छाया, वेशभूषा और राष्ट्रपति भवन का संदर्भ इसे आधिकारिक राजनीतिक पोर्ट्रेट बनाते हैं। विशेष रूप से कलाकार द्वारा आयु के दृश्य प्रभाव को थोड़ा कम करके स्वस्थ, ऊर्जावान और प्रभावशाली व्यक्तित्व प्रस्तुत करने का निर्णय यह दर्शाता है कि आधिकारिक पोर्ट्रेट में यथार्थ और आदर्शिकरण का संतुलन आवश्यक हो सकता है। कलाकार ने इसे फोटोग्राफिक नकल के बजाय कलात्मक व्याख्या माना।



4. प्रणब मुखर्जी का पोर्ट्रेट वर्ष 2016, 8x5 फीट का ऑयल ऑन कैनवस

प्रणब मुखर्जी का पोर्ट्रेट वर्ष 2016 में बनाया गया। यह 8x5 फीट का ऑयल ऑन कैनवस चित्र है और राष्ट्रपति भवन के स्थायी प्रदर्शन का हिस्सा है। इस चित्र की एक विशेषता यह है कि कलाकार ने राष्ट्रपति भवन की वास्तुकला और प्राकृतिक प्रकाश का गहन अध्ययन किया। उन्होंने ऐसा स्थान चुना जहाँ सूर्यप्रकाश सीधे मॉडल पर नहीं पड़ता था बल्कि फर्श से परावर्तित होकर व्यक्ति पर आता था। इस प्रकार इवनदबम सपहीज

को पोर्ट्रेट की प्रमुख तकनीकी विशेषता बनाया गया। वेशभूषा में भी कलाकार ने रचनात्मक निर्णय लिया। प्रणब मुखर्जी को धोती-कुर्ते और काली जैकेट में प्रस्तुत किया गया, जिससे उनकी बंगाली सांस्कृतिक पहचान को उभारा गया। यहाँ राजनीतिक पहचान को केवल संवैधानिक पद से नहीं बल्कि सांस्कृतिक पहचान से भी जोड़ा गया है। इसलिए चित्र राष्ट्रीय राष्ट्रपति और विशिष्ट बंगाली सांस्कृतिक व्यक्तित्व दोनों को एक साथ प्रस्तुत करता है। कलाकार ने प्रणब मुखर्जी के हाथों में दिखाई देने वाले तंजीतपजपे के प्रभाव को पूरी तरह हटाने के बजाय थोड़ा नियंत्रित किया। यह निर्णय उनके यथार्थवादी दृष्टिकोण में आदर्शिकरण की सीमित भूमिका को स्पष्ट करता है। घड़ी, चश्मा और जैकेट की चेन जैसी व्यक्तिगत वस्तुओं को भी सावधानी से चित्रित किया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि कलाकार के लिए छोटी वस्तुएँ केवल सजावटी तत्व नहीं बल्कि व्यक्तित्व की पहचान का हिस्सा हैं।



5. श्री रामनाथ कोविंद का पोर्ट्रेट वर्ष 2019 में ऑयल ऑन कैनवस में 8x5 फीट आकार में बनाया गया और राष्ट्रपति भवन के स्थायी संग्रह में रखा गया।

इस पोर्ट्रेट की विशेषता राष्ट्रपति की आकृति को राष्ट्रपति भवन, मुगल गार्डन, प्राकृतिक प्रकाश और राष्ट्रीय संस्थागत पहचान के साथ जोड़ना है। पृष्ठभूमि में राष्ट्रपति भवन का मुख्य गुंबद, जल में उसका प्रतिबिंब, फव्वारे, लाल पत्थर के मार्ग, हरियाली और वृक्ष दिखाई देते हैं। यहाँ पृष्ठभूमि केवल सजावट नहीं है। राष्ट्रपति भवन स्वयं संवैधानिक संस्था का प्रतीक है। इसलिए व्यक्ति और भवन का संयोजन चित्र को राजनीतिक अर्थ प्रदान करता है। कलाकार ने वास्तविक दृश्य को हूबहू दोहराने के बजाय परिप्रेक्ष्य में थोड़ा परिवर्तन किया और राष्ट्रपति की आकृति को अधिक प्रमुख बनाया ताकि विशाल वास्तुशिल्पीय पृष्ठभूमि मुख्य विषय पर हावी न हो। इस पोर्ट्रेट के निर्माण में लगभग छह महीने लगे। बड़े कैनवस, चेहरे और शरीर की सूक्ष्म संरचना, प्राकृतिक प्रकाश, वास्तु विवरण और उद्यान के वातावरण को विकसित करने में समय लगा। इस प्रकार रामनाथ कोविंद का पोर्ट्रेट राजनीतिक पोर्ट्रेट का एक विस्तृत संस्थागत मॉडल प्रस्तुत करता है जिसमें व्यक्ति, पद, वास्तुकला, प्रकृति, प्रकाश और राष्ट्रीय पहचान एक ही दृश्य संरचना में सम्मिलित होते हैं।



6. श्रीमती सुमित्रा महाजन का पोर्ट्रेट ऑयल ऑन कैनवस में आकार 30x24 इंच

श्रीमती सुमित्रा महाजन का पोर्ट्रेट आर. एम. सिंह की संसदीय राजनीतिक पोर्ट्रेट कला का महत्वपूर्ण उदाहरण है। स्रोत के अनुसार वे 16वीं लोकसभा की अध्यक्ष रही हैं और उनका पोर्ट्रेट संसद भवन की लोकसभा अध्यक्षों की गैलरी में स्थायी रूप से प्रदर्शित है। चित्र का आकार 30x24 इंच है, कमीशन 2022 में प्राप्त हुआ

और निर्माण 2023 में पूरा हुआ।

इस केस स्टडी की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता संदर्भ-फोटोग्राफ का चयन है। प्रारंभिक फोटोग्राफ में वे अत्यधिक हँसती हुई दिखाई दे रही थीं, जिसे कलाकार औपचारिक राजनीतिक पोर्ट्रेट के लिए उपयुक्त नहीं मानते थे। उन्होंने अतिरिक्त संदर्भ-चित्र मँगवाए और उनमें से उपयुक्त छवि का चयन किया। यह प्रक्रिया स्पष्ट करती है कि कलाकार फोटोग्राफ को अंतिम सत्य नहीं मानते। फोटोग्राफ केवल दृश्य संदर्भ है; अंतिम रचना कलाकार की संरचना, अनुभव और सौंदर्यबोध से निर्मित होती है। चित्र में सुमित्रा महाजन को गरिमापूर्ण और संतुलित मुद्रा में प्रस्तुत किया गया है। साड़ी के बैंगनी तथा पीच-बैंगनी टोन, गोल्डन बॉर्डर और सीमित रंग-पैलेट चित्र को संसदीय औपचारिकता प्रदान करते हैं। इस पोर्ट्रेट में महिला राजनीतिक व्यक्तित्व को अत्यधिक भावुक या केवल सौंदर्यपरक बनाने के बजाय गरिमा, आत्मविश्वास और सार्वजनिक नेतृत्व के साथ प्रस्तुत किया गया है। यह राजनीतिक महिला पोर्ट्रेट के अध्ययन की दृष्टि से विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। चश्मे, गले की चेन और आभूषण जैसे छोटे विवरणों को भी कलाकार ने पहचान का हिस्सा बनाया। इस प्रकार सूक्ष्म व्यक्तिगत वस्तुएँ पोर्ट्रेट की प्रामाणिकता और व्यक्तित्व को मजबूत करती हैं।

राजनीतिक पोर्ट्रेट में व्यक्तित्व और गरिमा

आर. एम. सिंह की राजनीतिक पोर्ट्रेट कला का सबसे महत्वपूर्ण तत्व व्यक्तित्व-अभिव्यक्ति है। कलाकार के अनुसार किसी व्यक्ति की केवल शारीरिक समानता पर्याप्त नहीं होती। उसके जीवन-अनुभव, आयु, भाव, व्यवहार और आंतरिक व्यक्तित्व की उपस्थिति भी चित्र में दिखाई देनी चाहिए। राजनीतिक व्यक्तियों के संदर्भ में यह और अधिक जटिल हो जाता है क्योंकि वे सामान्यतः प्रोटोकॉल, सुरक्षा और औपचारिक वातावरण से घिरे रहते हैं। कलाकार को इस औपचारिकता के बीच मॉडल के स्वाभाविक व्यक्तित्व को पहचानना पड़ता है। इस दृष्टि से राजनीतिक पोर्ट्रेट में चेहरे का अध्ययन मनोवैज्ञानिक अध्ययन में बदल जाता है। कलाकार केवल चेहरे की संरचना नहीं देखता बल्कि यह समझने का प्रयास करता है कि किस मुद्रा, प्रकाश और अभिव्यक्ति में व्यक्ति की गरिमा सबसे प्रभावशाली रूप से व्यक्त होगी।

प्रकाश एवं रंग का राजनीतिक अर्थ

प्रकाश आर. एम. सिंह की पोर्ट्रेट तकनीक में केवल तकनीकी उपकरण नहीं बल्कि रचना का अर्थ-निर्माण करने वाला तत्व है।

प्रणब मुखर्जी के पोर्ट्रेट में इवनदबम सपहीज का उपयोग व्यक्ति को गहरे वातावरण से उभारता है। इससे राष्ट्रपति की आकृति दृश्य केंद्र बनती है।

प्रतिभा पाटिल के पोर्ट्रेट में नियंत्रित प्रकाश और रंग संयोजन आधिकारिक गरिमा को स्थापित करते हैं।

रामनाथ कोविंद के चित्र में प्राकृतिक शाम का प्रकाश, मुगल गार्डन और जल में प्रतिबिंबित वास्तुशिल्प चित्र को अधिक वातावरणात्मक बनाते हैं।

सुमित्रा महाजन के चित्र में सीमित रंग-पैलेट और साड़ी के नियंत्रित रंग उनके व्यक्तित्व को औपचारिक और संतुलित रूप देते हैं।

इस प्रकार रंग और प्रकाश राजनीतिक पोर्ट्रेट में व्यक्तित्व की दृश्य शक्ति को नियंत्रित करते हैं।

पृष्ठभूमि, वास्तुकला और राष्ट्रीय प्रतीक

राजनीतिक पोर्ट्रेट में पृष्ठभूमि अत्यंत महत्वपूर्ण होती है क्योंकि वह चित्रित व्यक्ति के पद और संस्थागत पहचान को संदर्भ प्रदान करती है।

रामनाथ कोविंद के चित्र में राष्ट्रपति भवन की वास्तुकला और मुगल गार्डन का संयोजन सीधे राष्ट्रपति पद की संस्थागत पहचान से जुड़ता है।

प्रतिभा पाटिल के पोर्ट्रेट में राष्ट्रपति भवन, राष्ट्रीय ध्वज और औपचारिक वातावरण राजनीतिक पद की दृश्य पहचान को मजबूत करते हैं।

प्रणब मुखर्जी के पोर्ट्रेट में राष्ट्रपति भवन का कॉरिडोर केवल तबीपजमबजनतंस इंबाहतवनदक नहीं है; वह प्रकाश, गहराई और राजनीतिक पद की औपचारिकता का आधार बनता है।

इस दृष्टि से आर. एम. सिंह की पृष्ठभूमि-रचना को संस्थागत प्रतीकवाद कहा जा सकता है। व्यक्ति को संस्था से जोड़कर चित्र को व्यक्तिगत स्मृति से राष्ट्रीय स्मृति की ओर विस्तारित किया जाता है।

फोटोग्राफ और कलात्मक स्वतंत्रता

आधुनिक राजनीतिक पोर्ट्रेट में फोटोग्राफ एक आवश्यक संदर्भ-स्रोत हो सकता है, विशेषकर जब मॉडल

व्यस्त सार्वजनिक व्यक्ति हो। परंतु आर. एम. सिंह के कार्यों से स्पष्ट होता है कि फोटोग्राफ उनके लिए अंतिम रचना नहीं है। सुमित्रा महाजन के पोर्ट्रेट में कलाकार ने प्रारंभिक संदर्भ—फोटोग्राफ को अस्वीकार कर अन्य छवियाँ मँगवाई और उनमें से अधिक उपयुक्त छवि चुनी। प्रतिभा पाटिल के चित्र में कलाकार ने आयु और व्यक्तित्व को कलात्मक उद्देश्य के अनुसार पुनर्संयोजित किया। रामनाथ कोविंद के चित्र में वास्तविक स्थापत्य दृश्य को भी संरचना की आवश्यकता के अनुसार थोड़ा बदला गया। इससे निष्कर्ष निकलता है कि कलाकार का यथार्थवाद फोटोग्राफिक यथार्थवाद नहीं बल्कि व्याख्यात्मक यथार्थवाद है।

लाइव सिटिंग और कलाकार-मॉडल संबंध

राजनीतिक व्यक्तित्व के पोर्ट्रेट में प्रत्यक्ष बैठना कलाकार को चेहरे, त्वचा, शरीर, मुद्रा और व्यक्तित्व का प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान करता है। रामनाथ कोविंद के पोर्ट्रेट के लिए कलाकार ने राष्ट्रपति भवन के मुगल गार्डन में लाइव सिटिंग का अनुभव प्राप्त किया। प्रणब मुखर्जी के साथ भी कलाकार को अपेक्षा से अधिक समय मिला। वे कलाकार के साथ लंबे समय तक बैठे और रंग, ब्रश और पैलेट के बारे में बातचीत करते रहे। इस प्रकार सिटिंग केवल तकनीकी प्रक्रिया नहीं है। यह कलाकार और मॉडल के बीच संवाद स्थापित करती है, जिससे व्यक्तित्व को अधिक स्वाभाविक रूप से समझने का अवसर मिलता है।

क्र. सं.	पोर्ट्रेट	वर्ष	माध्यम	आकार	प्रमुख संदर्भ / स्थान	प्रमुख विशेषता
1	जानी गुरुनाथ मुसाफिर	2007	Oil on Canvas	34 × 26 इंच	संसद भवन	राजनीतिक व्यक्तित्व एवं संस्थागत स्मृति
2	शिवराज पाटिल	2012	Oil on Canvas	30 × 24 इंच	संसद भवन	लोकसभा अध्यक्ष की गरिमा एवं संसदीय व्यक्तित्व
3	प्रतिभा देवी सिंह पाटिल	2012	Oil on Canvas	लगभग 8 × 5 फीट	राष्ट्रपति भवन	महिला राष्ट्रपति, औपचारिक गरिमा एवं कलात्मक व्याख्या
4	प्रणब मुखर्जी	2016	Oil on Canvas	8 × 5 फीट	राष्ट्रपति भवन	Bounce Light, व्यक्तित्व की गरिमा एवं सांस्कृतिक पहचान
5	रामनाथ कोविंद	2019	Oil on Canvas	8 × 5 फीट	राष्ट्रपति भवन	वास्तुकला, मुगल गार्डन एवं राष्ट्रीय संस्थागत संदर्भ
6	सुमित्रा महाजन	2023	Oil on Canvas	30 × 24 इंच	संसद भवन	संसदीय गरिमा, स्त्री व्यक्तित्व एवं सीमित रंग-पैलेट

तालिका से स्पष्ट होता है कि सभी चयनित कृतियों में ऑयल ऑन कैनवस का प्रयोग है, लेकिन प्रत्येक पोर्ट्रेट की दृश्य भाषा उसके विषय और संस्थागत संदर्भ के अनुसार विकसित होती है। उपलब्ध स्रोत में इन सभी पोर्ट्रेटों के स्थायी संस्थागत प्रदर्शन का उल्लेख मिलता है। तुलनात्मक दृष्टि से संसद भवन से जुड़े पोर्ट्रेट अपेक्षाकृत छोटे आकार के हैं, जबकि राष्ट्रपति भवन के आधिकारिक पोर्ट्रेट 8x5 फीट जैसे विशाल आकार में हैं। इससे संस्थागत स्थान और चित्र के पैमाने के बीच संबंध स्पष्ट होता है। राष्ट्रपति भवन के चित्रों में वास्तुकला और वातावरण अधिक प्रमुख भूमिका निभाते हैं, जबकि संसद भवन के पोर्ट्रेटों में व्यक्ति और संसदीय पद की गरिमा अधिक केंद्रित दिखाई देती है।

संक्षिप्त तुलनात्मक निष्कर्ष

इस तालिका से स्पष्ट होता है कि कलाकार के राजनीतिक एवं संस्थागत पोर्ट्रेटों में ब्यस वद बंदों माध्यम का निरंतर प्रयोग दिखाई देता है। संसद भवन से संबंधित पोर्ट्रेट अपेक्षाकृत छोटे आकार—मुख्यतः 30x24 या 34x26 इंचकमें हैं, जबकि राष्ट्रपति भवन के लिए निर्मित पोर्ट्रेट बड़े 8x5 फीट के औपचारिक प्रारूप में दिखाई देते हैं। इससे पोर्ट्रेट के संस्थागत महत्व, प्रदर्शन—स्थल और दृश्य प्रभाव के बीच संबंध स्पष्ट होता है। विषयगत स्तर पर प्रारंभिक पोर्ट्रेटों में राजनीतिक पद और संस्थागत गरिमा प्रमुख हैं, जबकि बाद के कार्यों में कलाकार ने वास्तु—संदर्भ, प्रकाश, सांस्कृतिक पहचान, स्त्री व्यक्तित्व और रंग—संयोजन जैसे कलात्मक तत्वों को अधिक महत्व दिया है। इस प्रकार ये पोर्ट्रेट केवल व्यक्तिचित्र न होकर भारतीय लोकतांत्रिक संस्थाओं की स्मृति, सत्ता, गरिमा और सांस्कृतिक पहचान के दृश्य दस्तावेज के रूप में भी देखे जा सकते हैं।

विश्लेषण एवं चर्चा

आर. एम. सिंह की राजनीतिक पोर्ट्रेट कला का विश्लेषण करने पर सबसे पहले यह स्पष्ट होता है कि उनके लिए यथार्थवाद केवल बाहरी रूप की नकल नहीं है। वे चेहरे की समानता को प्रारंभिक आधार मानते हैं, लेकिन अंतिम चित्र में व्यक्तित्व, गरिमा और सामाजिक प्रभाव को जोड़ते हैं।

दूसरा प्रमुख निष्कर्ष यह है कि कलाकार व्यक्ति और पद के बीच दृश्य संतुलन स्थापित करते हैं। राष्ट्रपति का चित्र केवल व्यक्ति का नहीं बल्कि राष्ट्रपति पद का प्रतिनिधित्व करता है। इसी प्रकार लोकसभा अध्यक्ष का चित्र व्यक्ति को संसदीय संस्था से जोड़ता है।

तीसरा तत्व स्थान का राजनीतिक अर्थ है। राष्ट्रपति भवन और संसद भवन की पृष्ठभूमि केवल decorative setting नहीं बल्कि political signifier के रूप में काम करती है। रामनाथ कोविंद के पोर्ट्रेट में राष्ट्रपति भवन और मुगल गार्डन इसका स्पष्ट उदाहरण हैं। चौथा तत्व कलात्मक चयन है। प्रतिभा पाटिल के चित्र में आयु के प्रभाव को नियंत्रित करना और सुमित्रा महाजन के लिए संदर्भ—फोटोग्राफ बदलना दिखाता है कि कलाकार आधिकारिक चित्र को एक आदर्शकृत लेकिन विश्वसनीय दृश्य दस्तावेज के रूप में विकसित करते हैं। पाँचवाँ तत्व व्यक्तिगत सांस्कृतिक पहचान है। प्रणब मुखर्जी को धोती—कुर्ता और काली जैकेट में प्रस्तुत करना केवल वेशभूषा का चयन नहीं है; यह उनके बंगाली सांस्कृतिक व्यक्तित्व को राष्ट्रपति पद के साथ जोड़ता है। छठा तत्व सूक्ष्म वस्तुओं का प्रयोग है। घड़ी, चश्मा, आभूषण, चैन और कपड़े की बनावट जैसे छोटे तत्व व्यक्ति को अधिक व्यक्तिगत और विश्वसनीय बनाते हैं।

समग्र निष्कर्ष

समग्र अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि आर. एम. सिंह की राजनीतिक पोर्ट्रेट कला को केवल यथार्थवादी चवतजतपजनतम के अंतर्गत रखना पर्याप्त नहीं होगा। यह राजनीतिक प्रतिनिधित्व, दृश्य संस्कृति, संस्थागत स्मृति, व्यक्तित्व—निर्माण और राष्ट्रीय पहचान के बीच सक्रिय संबंध स्थापित करती है। उनकी कला में चेहरा पहचान का आधार है, प्रकाश व्यक्तित्व का वाहक है, रंग भाव और गरिमा को नियंत्रित करता है, वेशभूषा सांस्कृतिक पहचान प्रस्तुत करती है, पृष्ठभूमि संस्थागत संदर्भ निर्मित करती है और सूक्ष्म वस्तुएँ निजी पहचान को मजबूत करती हैं। इस प्रकार प्रत्येक राजनीतिक पोर्ट्रेट अनेक स्तरों पर अर्थ का निर्माण करता है। अंतरराष्ट्रीय पोर्ट्रेट परंपरा में जिस प्रकार राजनीतिक पोर्ट्रेट शक्ति, स्थिति, वैधता और स्मृति से जुड़ा रहा है, उसी व्यापक परंपरा का भारतीय लोकतांत्रिक संदर्भ में एक समकालीन रूप आर. एम. सिंह के कार्यों में दिखाई देता है। इसलिए आर. एम. सिंह के राजनीतिक पोर्ट्रेट भारतीय समकालीन कला में केवल व्यक्तियों के चित्र नहीं, बल्कि भारतीय लोकतांत्रिक संस्थाओं, राजनीतिक नेतृत्व और राष्ट्रीय दृश्य—स्मृति के चित्रात्मक अभिलेख के रूप में अध्ययन योग्य हैं।

Author's Declaration

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ ग्रंथ—

1. कौर, म. (1987). सोभा सिंह, पेंटर ऑफ द डिवीन (Sobha Singh: Painter of the Divine). गुरु नानक देव विश्वविद्यालय।
2. रेलिया, अ., एवं परीमू, र. (प्रकाशन वर्ष अनुपलब्ध). द इंडियन पोर्ट्रेट (The Indian Portrait), कोलोनियल इन्फ्लुएंस ऑन राजा रवि वर्मा एंड हिज आर्ट। खरकाशन संबंधी विवरण अपूर्ण,।
3. लेखक अनुपलब्ध. (प्रकाशन वर्ष अनुपलब्ध). औपनिवेशिक शासन के अंतर्गत सांस्कृतिक उत्पादनरू आधुनिक आंध्र में चित्रकला के विकास का अध्ययन (1900—1947). खशोधप्रबंध; विश्वविद्यालय का नाम अनुपलब्ध,।
4. रानी, स. (2001). पंजाब के यथार्थवादी कलाकार (Realist Artists of Punjab). पंजाब ललित कला अकादमी एवं लोकायत पब्लिकेशन्स।
5. सिंह, क. (2012). सिख कैलेंडर कला का विश्लेषणात्मक अध्ययन खप्रकाशित शोधप्रबंध, पंजाबी विश्वविद्यालय,।
6. दिंकर, न. (2014). निजी जीवन और आंतरिक स्थानरू राजा रवि वर्मा के विद्वान पुरुषों के चित्र खशोधप्रबंध, बोइस स्टेट यूनिवर्सिटी,।
7. वर्मा, आ. (2015). समकालीन भारतीय कला चित्रकला में रामायण और महाभारत का अध्ययन खशोधप्रबंध,

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय,।

8. शेट, शि. मु. (2016). भारतीय ओलियोग्राफीरु जनसंचार, तकनीकी एवं आलोचनात्मक अध्ययन की ओर एक दृष्टिकोण ख़ोधप्रबंध, विश्व-भारती विश्वविद्यालय,।
9. ताहमणकर, क. वा. (2017). ग्राफिक कला का इतिहासरु बीसवीं शताब्दी में पंजाब और चंडीगढ़ में मुद्रण कला ख़ोधप्रबंध, पंजाब विश्वविद्यालय,।
10. मुखर्जी, क. (2017). प्राचीन भारतीय चित्रकला का उत्तर-औपनिवेशिक भारतीय फैशन एवं जीवन-शैली पर प्रभाव और प्रभावशीलता का अध्ययन ख़ोधप्रबंध, बनस्थली विद्यापीठ,।
11. तावमणकर, क. (2017). बीसवीं सदी में पंजाब और चंडीगढ़ में ग्राफिक आर्ट प्रिंटमेकिंग का इतिहास ख़ोधप्रबंध, पंजाब विश्वविद्यालय,।
12. सिंह, उ. (2017, 20 मई). शोख रंगों का जादूगर। पंजाबी ट्रिब्यून।
13. भंडारी, क. (2018). पंजाब के आधुनिक चित्रकारों का अध्ययन ख़ोधप्रबंध, पंजाबी विश्वविद्यालय,।
14. गुप्ता, सि. (2018). बीसवीं और इक्कीसवीं सदी में सिख दृश्य संस्कृति का अध्ययन ख़ोधप्रबंध; विश्वविद्यालय का नाम अनुपलब्ध,।
15. सिंह, न. (प्रकाशन तिथि अनुपलब्ध). ब्रश विद सिख हिस्ट्री (Brush with Sikh History)। द ट्रिब्यून।
16. साहू, टी. कू. (2018). भारत में समकालीन उभार कला (मंडिपेदह |तज) की प्रथाएँ एक अन्वेषणात्मक अध्ययन ख़ोधप्रबंध, लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी,।
17. बानो, रु. शे. (2018). बंगाल के प्रगतिशील कला आंदोलन का एक आलोचनात्मक अध्ययन ख़ोधप्रबंध, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय,।
18. ग्रेवाल, अ. (2018). आधुनिक भारतीय चित्रकला पर आलोचनात्मक लेखन, लगभग 1900-1970 ई. ख़ोधप्रबंध, पंजाब विश्वविद्यालय,।
19. सिंह, क. (2019, नवंबर). गुरु नानक देव जी के प्रतीक चित्रों का एक अध्ययन। ख़काशन विवरण अनुपलब्ध,।
20. कपूर, डी. एस. (2019, 1 दिसंबर). राही मोहिंदर सिंहदुराजसी पोर्ट्रेट पेंटर। द ट्रिब्यून।
21. सिंह, क. (2020, दिसंबर). गुरु तेग बहादुर जी के जीवन की दृष्टिगत कथाओं का अध्ययन। ज्ञानकोशरु एक अंतर-अनुशासनात्मक जर्नल, 3।
22. कपूर, डी. एस. (2020, 31 अगस्त). सरदार मेहर सिंहदुराजसी पोर्ट्रेट पेंटर। द ट्रिब्यून।
23. जोशी, सं. (2020, 9 अक्टूबर). कला का राही पिंड से राष्ट्रपति भवन पहुँचा। दैनिक ट्रिब्यून।
24. यूसुफ, अ. (2020). समकालीन भारतीय कला में महिलाओं का चित्रण, कलाकार और उनके कला-दर्शन ख़ोधप्रबंध, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय,।
26. आनंद, सि. कौ. (2024). ख़ोधप्रबंध का शीर्षक अनुपलब्ध, ख़ोधप्रबंध, यूनिवर्सिटी ऑफ मिशिगन,।
27. सिंह, प्री. (2026). राजा रवि वर्मा और सोभा सिंह के ओलियोग्राफ का तुलनात्मक अध्ययन ख़ोधप्रबंध; विश्वविद्यालय का नाम अनुपलब्ध,।

Cite this Article-

'Kewal Krishan', "A Comparative Study of the Socio-Economic Status of Women Representatives in Urban vs. Rural Local Bodies of Chamba District", Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal, ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:3, Issue:7, July 2026.

“Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under Creative Commons Attribution 4.0 (CC-BY), allowing others to use, share, modify, and distribute it with proper credit to the author.”